



वैश्विक हिंदी पत्रिका

वैश्विक हिंदी परिवार का मासिक पत्र

■ प्रवेशांक

■ जनवरी, 2024

इस अंक में

अनिल शर्मा 'जोशी' द्वारा
अग्रलेख....

साझा वर्तमान, साझा भविष्य
1989 में मुझे संघ लोक सेवा
आयोग के समक्ष हुए विश्व
के..... पृष्ठ 2

संपादकीय.....

हर बीज की भूमिका होती है।
बीज ही फल का इतिहास.....
पृष्ठ 3

इस अंक में....

- ❖ मुख्य गतिविधियाँ
पृष्ठ : 1
- ❖ शुभकामना संदेश
पृष्ठ : 2
- ❖ संपादकीय व विश्वरंग
पृष्ठ : 3
- ❖ वैश्विक हिंदी परिवार
कार्यक्रम
पृष्ठ : 4
- ❖ वातायन कार्यक्रम
पृष्ठ : 5
- ❖ हिंदी राइटर्स गिल्ड
कार्यक्रम
पृष्ठ 6
- ❖ पुस्तक समीक्षा –
कविता
पृष्ठ 7
- ❖ टीम परिप्रेक्ष्य एवं
संदेश - पृष्ठ – 8

भोपाल, मध्यप्रदेश में सजा भारतीय भाषा, साहित्य, संस्कृति और कला का वैश्विक मंच - विश्व रंग



भाषा, साहित्य, संस्कृति और कला की सृजनशील दुनिया को अपने समय में देखने-परखने और उसके प्रति उत्साह का नया परिवेश रचने की उत्सवी आकांक्षा से 14 से 24 दिसम्बर 2023 तक रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल में “विश्व रंग” का शालीन और बेहतरीन ढंग से सफल आयोजन हुआ। इसमें दुनिया के देशों से 500 प्रतिनिधि नामचीन हस्तियों ने 50 सत्रों में हर्षोल्लास और मनोयोग से सहभागिता कर अपने विचार रखे। विश्व रंग में मानव जीवन और जगत के बहुरंगी फ़लक को रचने का मंजर रोशन रहा। भारत के किसी भी शैक्षणिक संस्थान की पहल पर होने वाला यह पहला विश्व स्तरीय कीर्तिमान रचने वाला महोत्सव था। इस महोत्सव में अनेक संस्थाओं के साथ “वैश्विक हिन्दी परिवार” की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस विश्व कुम्भ में भाषा, साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, सिनेमा, पत्रकारिता, कला, पर्यावरण तथा लोक संगीत सहित अनेक विषयों के अनूठे मंच पर भव्य शुभारंभ और मंथन के पश्चात पौष्टिक अवलेह व सार तत्व संग्रहीत हुए।

मुख्य अतिथि के रूप में पथारे साहित्यकार और पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ॰ रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने कहा कि हिन्दी की प्रतिस्पर्धा किसी भी भारतीय

भाषा से नहीं है। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं विश्व रंग के निदेशक डॉ॰ संतोष चौबे ने भारतीय भाषा, साहित्य, संस्कृति, कला, लोकभाषा और प्रवासी भारतीयों के कार्यों को सम्मान सहित आगे बढ़ाने की वकालत की। उनका स्पष्ट मत था कि हमारा वैविध्य हमारी ताकत है, जिसका संरक्षण-संवर्धन और विस्तार आवश्यक है। विशेष अतिथि एवं विश्व हिन्दी सचिवालय की महासचिव डॉ॰ माधुरी रामधारी ने कहा कि हिन्दी को विश्व भाषा बनाने के लिए विश्व रंग का आयोजन महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय है। विश्व रंग में सामूहिक सत प्रयत्न अभिनंदनीय है। प्रख्यात लेखक श्री पवन वर्मा का कहना था कि इससे युवाओं को जोड़ने की निहायत जरूरत है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्कृति न्यास के राष्ट्रीय सचिव श्री अतुल कोठारी ने हिन्दी और भारतीय भाषाओं के लिए इस उपक्रम को स्तुत्य बताया। प्रख्यात संस्कृत विद्वान डॉ॰ राधा बल्लभ त्रिपाठी ने विश्व रंग को भारतीयता का पुंज बताया। वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने विश्व रंग द्वारा भारतीयता की जड़ें सींचने और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने की पहल हेतु विश्वविद्यालय को आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर आधुनिक सज्जित सभागार में विश्व रंग के सह-निदेशक डॉ॰ सिद्धार्थ चतुर्वेदी, श्री लीलाधार मंडलोई, श्री मुकेश वर्मा, डॉ॰ अदिति चतुर्वेदी, डॉ॰ जवाहर कर्नावट एवं देश विदेश से पथारे असंख्य विद्वान-विदुषी और गणमान्य लोग उपस्थित थे। इस मौके पर सात भारतीय भाषाओं के मशहूर विद्वानों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।



हिंदी-यू.एस.ए. के विद्यार्थियों का भारत दौरा एवं अभिनन्दन समारोह

दिनांक 18 अक्टूबर 2023 को अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् और अन्तरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के तत्वावधान में वैश्विक हिन्दी परिवार द्वारा अमेरिका के हिन्दी विद्यार्थियों और अध्यापकों का 'अभिनन्दन समारोह', आज़ाद भवन, अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम आत्मीय माहौल में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

भारत के पूर्व शिक्षा मंत्री, सांसद श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की अध्यक्षता एवं श्री नारायण कुमार (मानद निदेशक, अन्तरराष्ट्रीय

सहयोग परिषद्), श्री वरुण कुमार (निदेशक, राजभाषा, रेल मंत्रालय), श्री देवेन्द्र सिंह (संस्थापक- हिन्दी यू.एस.ए.) की उपस्थिति में प्रख्यात कवि श्री राजेश चेतन द्वारा संचालित इस समारोह में अमेरिका के 15 विद्यार्थियों ने राष्ट्रीयता से ओतप्रोत प्रस्तुतियाँ हिंदी में दीं। उन्होंने सभी उपस्थित जनों का मन मोह लिया। कार्यक्रम का संयोजन वैश्विक हिंदी परिवार के श्री राजेश जैन व दिल्ली संयोजक विनयशील चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'
Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank'
सांसद, हरिद्वार (लोक सभा)
पूर्व शिक्षा मंत्री, भारत सरकार
पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड
Member of Parliament, Haridwar (Lok Sabha)
Former Education Minister, Government of India
Former Chief Minister, Uttarakhand



20, तुगलक क्रिसेंट, नई दिल्ली-110011
20, Tughlak Crescent, New Delhi-110011
दूरभाष : 011-21430588
Telephone : 011-21430588
E-mail : drrameshpokhriyal@gmail.com
Website : www.drpnishank.com

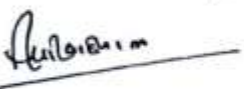
संदेश



मुझे यह जानकारी अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि वैश्विक हिन्दी परिवार द्वारा एक हिन्दी मासिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया जा रहा है। इस समाचार पत्र के माध्यम से वैश्विक हिन्दी परिवार विश्व के हिन्दी लेखकों और विद्वानों को एक मंच पर लाने का प्रयास कर रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस समाचार पत्र के माध्यम से जहाँ एक ओर विभिन्न देशों में हो रही साहित्यिक गतिविधियों से हम सब एक दूसरे से जुड़ पायेंगे, वहीं दूसरी ओर यह समाचार पत्र हिन्दी की श्रीवृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान भी देगा।

मैं इस समाचार पत्र के सम्पादक मण्डल और इससे जुड़े सभी लेखकों एवं विद्वानों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।


(डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक')

स्थायी निवास : 37/1, रवीन्द्र नाथ टैगोर मार्ग, विजय कॉलोनी, देहरादून, उत्तराखण्ड-248001 • दूरभाष : 0135-2718899
Permanent Address: 37/1, Ravindra Nath Tagore Marg, Vijay Colony, Dehradun, Uttarakhand-248001 • Telephone: 0135-2718899

यह एक परिवार है



वैश्विक हिन्दी परिवार, अपने नामानुसार, सिर्फ एक संस्था नहीं है, विश्व में फैले हुए हिन्दी के संस्कारों को एक छत प्रदान करने वाला अभियान है। अभियान की वह छत जिस पर दुनिया के अलग-अलग भू भाग-में रहने वाले हिन्दी प्रेमी, कभी एक साथ सुबह चाय के प्याले को, तो कभी पलकों पर तैरते सपनों को साथ बैठ कर, अपनी अभिव्यक्ति के आँगन में बाँट सकें। तो कभी, उस छत के नीचे, हिन्दी की छाँव में, वैश्विक पटल के वर्तमान धरातल पर, नयी पीढ़ी के साथ, एक नयी मंज़िल का निर्माण कर सकें।

यह गर्व का क्षण है कि 2020 के आरंभ में इस कदम की यात्रा, हाट्सऐप समूह के साथ जन्मी, जूम के साप्ताहिक वर्चुअल कार्यक्रमों की गोद में फलती फूलती, अब इस मोड़ पर नई पतंग फहराने जा रही है।

नवीनतम प्रयास - वैश्विक हिन्दी मासिक समाचार पत्र का शुभारंभ, हिन्दी भाषा और साहित्य को समर्पित एक महत्वपूर्ण कदम है। यह पत्र न केवल हमें जोड़ेगा, बल्कि हिन्दी के प्रति हमारे जुनून और समर्पण को भी दर्शाएगा। हमारे इस साझा मंच के माध्यम से, हम विश्व भर के हिन्दी लेखकों, विद्वानों, और प्रेमियों को एक-दूसरे से जोड़ेंगे और हिन्दी साहित्य को नई ऊँचाइयों पर ले जाएंगे।

आइए, हम सभी मिलकर इस नवीन पहल को सफल बनाएं और हिन्दी के विकास की नई दिशाओं का निर्माण करें।

डॉ. पद्मेश गुप्त
संरक्षक, वैश्विक हिन्दी परिवार



आइए वर्तमान साझा करें और साझा भविष्य गढ़ें

मैं वर्ष 1979 से हिन्दी से जुड़ा हूँ। वर्ष 1989 में मुझे संघ लोक सेवा आयोग के समक्ष हुए विश्व के सबसे लंबे धरने के संयोजन का मौक़ा मिला। इससे मैं भाषा के लिए समर्पित योद्धाओं से संपर्क में आया। मैंने वर्ष 2000 में ब्रिटेन में हिन्दी और संस्कृति (अताशे) के रूप में कार्यभार सँभाला। यहीं से मेरे वैश्विक परिचय की शुरुआत हुई। विभिन्न राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, सूरीनाम के विश्व हिन्दी सम्मेलन और हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता से इसे बल मिला। डॉ. पद्मेश गुप्त और दिव्या माथुर के साथ हमारी एक यूरोपीय और वैश्विक टीम बनी। वर्ष 2005 में भारत आकर प्रवासी टुडे, अक्षरम संगोष्ठी व अक्षरम संस्था के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध परिषद को जोड़ते हुए 12 वर्षों तक प्रत्येक वर्ष अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के आयोजन से दिल्ली और भारत में अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों के केंद्र में आने का मौक़ा मिला।

फ़ीजी में उच्चायोग में द्वितीय सचिव (हिन्दी और संस्कृति) व विभिन्न पदों पर काम करते हुए प्रशांत क्षेत्र के विभिन्न द्वीप समूह देशों, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड आदि के हिन्दी प्रेमियों से जुड़ने का मौक़ा मिला।

वर्ष 2020 में केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मंडल में उपाध्यक्ष के रूप में दायित्व सँभालने के पश्चात देश-विदेश में कार्यरत हिन्दी संस्थाओं, हिन्दी प्रेमियों और विद्वानों से घनिष्ठ संपर्क का मौक़ा मिला। कोरोना में वैश्विक हिन्दी परिवार के गठन से प्रति सप्ताह आभासी कार्यक्रमों से आत्मीयता और घनिष्ठ हो गयी। इस कार्य में डॉ. जवाहर कर्नावट, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. संध्या सिंह, डॉ. शैलजा सक्सेना, डॉ. मोहन बहुगुणा, डॉ. जय शंकर यादव आदि का विशेष सहयोग मिला। इस मासिक पत्रिका के माध्यम से आपस में सूचनाओं, गतिविधियों और उपलब्धियों को साझा करने से वैश्विक स्तर पर हिन्दी की गतिविधियों को बल मिलेगा। चुनौतियों को समझने में और रणनीति निर्धारण, प्रयत्नों को सघन करने में और संबंधों को सशक्त करने में संबल मिलेगा परंतु यह इस पत्रिका के स्तर व आप सब की भागीदारी पर निर्भर करता है। आशा है इस पत्रिका को सदा की तरह आपका सहयोग और सक्रिय समर्थन मिलता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

अनिल जोशी
अध्यक्ष, वैश्विक हिन्दी परिवार

मुख्य परामर्शदाता की कलम से..



वैश्विक हिंदी को मंच प्रदान

वैश्विक हिंदी पत्रिका को वैश्विक हिंदी परिवार और उसकी सहयोगी संस्थाओं द्वारा हिन्दी को विश्व पटल पर प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से शुरू किया जा रहा है। दुनियाँ के कोने-कोने में हिन्दी पर आधारित शैक्षणिक, सांस्कृतिक सम्मेलनों, कार्यक्रमों और बैठकों के साथ-साथ महत्वपूर्ण पुस्तकों की समीक्षा, साक्षात्कार आदि की जानकारी को इस पत्रिका के जरिए एक ही मंच पर हिन्दी के देशी और विदेशी पाठकों, विद्यार्थियों, शिक्षकों और संस्थानों के समक्ष लाने का प्रयास है। हिन्दी भाषा को देश विदेश में मज़बूत करने की इच्छा हम सभी की है और इस सदिच्छा को साकार करने की दिशा में बढ़ने के साथ-साथ, इस पत्रिका के जरिए हमारा उद्देश्य दुनियाँ भर में कार्यरत हिन्दी के सिपाहियों को जोड़ना भी है।

पत्रिका का उद्देश्य सिर्फ़ एक तरफ़ा संवाद नहीं बल्कि पाठकों की खट्टी-मीठी प्रतिक्रियाओं और सुझावों का स्वागत करना भी है और आपकी प्रतिक्रियाएँ ही आने वाले अंकों में पत्रिका को बेहतर रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करने में सहायक होंगी।

आइए हम सभी मिलकर हिंदी की अलख जगाएँ।
हिंदी हिंद की और हम सबकी, यह संदेश फैलाएँ ॥

आप सभी को नववर्ष 2024 और 10 जनवरी के विश्व हिन्दी दिवस की ढेरों शुभकामनाएँ।

डॉ. शिव कुमार सिंह
मुख्य परामर्शदाता, वैश्विक हिंदी पत्रिका
लिस्बन

अपनी बात.....



पत्रिका का हर्षदायक प्रवेशांक

हर बीज की भूमिका होती है। बीज ही फल का इतिहास होता है। कुछ विचारकों के मनः मस्तिष्क में कोविड काल में जून 2020में वैश्विक हिंदी परिवार की शुरुआत का विचार कौंधा और मूर्त रूप पाया। उसी समय से ही प्रत्येक रविवार निर्विघ्न रूप से ज्ञान-दान और स्वांतः सुखाय की प्रक्रिया चलती रही। उद्गाता आदित्य का प्रकाश मिलता गया और अबाध गति से कारवाँ बढ़ता गया। इसमें अनेक विद्वान विदुषियों आदि ने समय और श्रम की समिधा से स्वाहा किया। हम कृतज्ञ हैं। इसी त्याग में से ही इस पत्रिका का अभी नवोन्मेषी अंकुरण हुआ है।

हिंदी की दुनियाँ और दुनियाँ की हिंदी का स्वर स्वाभाविक है। सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति के इस युग में यह एक लघु सत प्रयत्न है जिसमें वैश्विक कार्यक्रम, हिंदीतर क्षेत्रों की गतिविधियाँ, पुस्तक समीक्षा, साक्षात्कार और संदेश आदि समाहित हैं। आशा है कि इससे चिंतन के नए आयाम स्थापित होंगे और भाषाई मार्ग प्रशस्त होगा। सहयोग की अपेक्षा है। सुझावों का स्वागत है। सर्वेषाम् मंगलम्, भवेत् सुखम्।

जयतु सेतु हिंदी।

डॉ. जयशंकर यादव
संपादक, वैश्विक हिंदी परिवार



भोपाल में आयोजित विश्व रंग के अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन के मायने

विश्व रंग का अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन 21 -24 दिसंबर को संपन्न हुआ। देश -विदेश से आए महत्वपूर्ण विद्वानों / लेखकों का यह संगम कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण था। हम भी पिछले 30 सालों से कई सम्मेलन देख चुके हैं। कई विश्व हिंदी सम्मेलनों और दसियों राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों में भागीदारी की है। निजी प्रयासों से ऐसे सम्मेलन जिसमें प्रतिभागियों के आने-जाने और शीर्षस्थ होटलों में रहने की व्यवस्था हो और उसका खर्चा कोई निजी संस्थान उठा रहा हो यह क्यों हैं? क्या कोई लेखक, साहित्यकार, जो कुलाधिपति भी हो, ऐसा हो सकता है जो अपनी धुन और लगन में देश-विदेश और कई तरह की विधाओं के कलाकारों को स्नेह के बंधन में जोड़ ले और एक व्यापक चित्र का निर्माण कर प्रस्तुत करे। जिसमें राजनीतिक महत्वाकांक्षा न हो और जिसके व्यक्तित्व का पिलपिलापन उसे स्वार्थों का रास्ता न दिखाए। साहित्य जिसमें विवेक दृष्टि दे और जो सम्यक चिंतन और अभिव्यक्ति में दक्ष हो। साहित्य जिसके डी.एन.ए. में हो। जो स्वयं एक स्थापित साहित्यकार-आलोचक हो। जिसकी दृष्टि दूरगामी और व्यापक हो।

यह सम्मेलन एक बार का चमत्कार नहीं था। वर्ष 2019 से श्री संतोष चौबे यही करतब कर रहे हैं। वैश्विक स्तर पर उनकी यह यात्रा वहीं से शुरू होती है। मुझे प्रसन्नता है कि उनकी इस पहल में मुझे 2019 से जुड़ने का मौका मिला। सुषम बेदी, राहुल देव, कमल किशोर गोयनका और पचास से अधिक विदेशी प्रतिनिधियों की उपस्थिति में वह आयोजन सुखद आश्चर्य था। पर वह एक बार की बात नहीं थी। उन्होंने वर्ष 2020 में उसे दोहराया और फिर तो यह क्रम चालू हो गया। यह निरंतरता चकित करने वाली थी। यह किसी शुभ संकल्प या किसी विराट उद्देश्य की परिचायक थी।

वास्तव में यह हिंदी के वैश्विक समाज को एक सूत्र में जोड़ने का प्रयत्न था। इसमें संकल्प के साथ उदारता भी थी और विनम्रता भी। सबको साथ लेकर चलने का भाव था। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि वातायन और ऑक्सफोर्ड बिजनेस कालेज द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में हिंदी के लिए निरंतर कार्य करने और नीति तथा इरादों को जमीन पर उतारने की सहमति बनी। विश्व हिंदी सचिवालय, वैश्विक हिंदी परिवार, डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', डॉ. सच्चिदानंद जोशी, भारतीय भाषा मंच के श्री अतुल कोठारी, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद जैसे व्यक्तियों और संस्थाओं ने हाथ बढ़ाया और आयोजनों ही नहीं बल्कि उद्देश्यों और ठोस परिणामों पर बल देने का निर्णय हुआ। गुजरात-लंदन-भोपाल और दिल्ली उसी प्रयास के पड़ाव हैं। हमारी दृष्टि और उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्रों का निर्माण इस आयोजन की सबसे बड़ी सफलता है। प्रवासी साहित्य शोध केन्द्र, अनुवाद, नाटक, लोक साहित्य आदि के केन्द्रों का निर्माण और उनका माननीय पूर्व शिक्षा मंत्री द्वारा उद्घाटन, यह स्पष्ट करता है कि यह आयोजन एक नींव गढ़ने का प्रयत्न कर रहा है जो अपनी परिणिति में हिंदी की सुगंध को हर तरफ ले जाएगा। यह हिंदी को अच्छे इरादों ही नहीं अपितु ठोस निर्णयों और उपलब्धियों की भाषा बनाए। इस भव्य आयोजन के लिए श्री संतोष चौबे और उनकी समर्पित टीम का हार्दिक अभिनंदन।

अनिल जोशी
anilhindi@gmail.com

विश्व हिंदी सचिवालय, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद और केंद्रीय हिंदी संस्थान के तत्वावधान में

वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा आयोजित रविवारीय कार्यक्रम



भारतीय भाषा दिवस – वैश्विक परिप्रेक्ष्य

वैश्विक हिंदी परिवार के तत्वावधान में भारतीय भाषाओं में समन्वय और सौहार्द की दृष्टि से भारत सरकार के निर्णय के अनुसार वैश्विक परिप्रेक्ष्य में “भारतीय भाषा दिवस” का कवितामय आयोजन किया गया। ज्ञातव्य है कि राष्ट्रकवि सुब्रमण्य भारती की जयंती 11 दिसम्बर को शिक्षा मंत्रालय द्वारा यह उत्सव चिन्हित किया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कन्नड और हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. टी आर भट्ट ने सभी को इस उत्सव की बधाई देते हुए भारतीय भाषाओं को समृद्ध करने और भाषाई सौहार्द बनाए रखने की अपील की। उन्होंने भाषा सहोदरी के रूप में सभी भारतीय भाषाओं को एक ही परिवार से उद्भूत बताया और राष्ट्रीय एकता तथा भावात्मक संबंधों के साथ जागृत होकर आगे बढ़ने हेतु प्रेरित किया। मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के सह संयोजक श्री ए. विनोद ने सामासिक संस्कृति को ध्यान में रखते हुए सभी को एक से अधिक भारतीय भाषाएँ सीखने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में सान्निध्य दे रहे अनिल श्री जोशी ने अपनी रचना “पहला मोर्चा भाषा का है” का वाचन कर भाषाई मोर्चे को मजबूत बनाने हेतु सबके अंतस को आंदोलित किया।

महाकवि चिन्नस्वामी सुब्रमण्य भारती के व्यक्तित्व और कृतित्व पर सचित्र प्रस्तुति देते हुए पांडिचेरी विश्वविद्यालय से प्रो. सी. जय शंकर बाबु ने उनके जन्म से लेकर आखिरी क्षणों तक की मात्र 39 वर्षीय जीवन यात्रा (1882-1921) की प्रस्तुति की। तमिल, हिंदी, संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी के विद्वान राष्ट्रकवि भारती ने राष्ट्रीय चेतना को अपने साहित्य से जागृत किया और स्वतन्त्रता आंदोलन में जन-मन को झकझोरते हुए अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध आंदोलित किया। उन्होंने अपनी हजारों रचनाओं के अलावा विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लेखों, कविताओं और कादंब्रियों के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना बलवती की और समाज सुधार के बृहद कार्य किए। उनकी यशः काया अमर रहेगी।

इस अवसर पर लंदन से जुड़ी, तेलुगू कवयित्री एवं रंगकर्मी डॉ. रागसुधा विजमूरी ने “कुछ भी नहीं असंभव, कुछ भी नहीं असाध्य” सुनाकर भावविभोर किया। नीदरलैंड से मराठी कवयित्री डॉ. मानसी सगदेव ने कृष्ण एवं यशोदा के चित्र से संबन्धित कविता “यशोदा तेरे कान्हा ने छीने हैं चैन हमारो” सुनाकर आनंद बिखेरा। दुबई से मलयालम में लता रजित जी द्वारा अपनी कविता में “माँ के सत्य” को उजागर किया गया। कनाडा के टोरंटो से पंजाबी में कवयित्री सुरजित कौर जी ने “ब्रह्मांड की परिक्रमा” कविता सुनाकर देश की मिट्टी से मुलाकात करवाई। अमेरिका से वैज्ञानिक और उर्दू कवि डॉ. अब्दुल्लाह ने मिठास घोलते हुए माँ की महिमा का बखान किया। सऊदी अरब से गुजराती में आरती विमल परीख जी द्वारा साँच को सँजोकर रखने और होठों पर समुचित मौन रखने हेतु कविता सुनाई। सभी ने इन रचनाओं का हिंदी अनुवाद भी साथ-साथ प्रस्तुत किया।

कनाडा से साहित्यकार डॉ. शैलेजा सक्सेना द्वारा विषय प्रवर्तन और सागरभित्त शुरुआत की गई और सिंगापुर से साहित्यकार एवं पत्रकार श्रीमती आराधना झा द्वारा संचालन किया गया तथा डॉ. जयशंकर यादव द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। वैश्विक हिंदी परिवार के 10 दिसम्बर 2023 के कार्यक्रम की रिपोर्ट



ऑनलाइन हिन्दी शिक्षण – नई दिशाएँ

वैश्विक हिंदी परिवार के तत्वावधान में विश्व में ऑनलाइन हिंदी शिक्षण की जरूरतों और नई दिशाओं की महत्ता के मद्देनजर रविवारीय व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी के भाषाविद प्रो. पीटर फ्रिडलैंड ने आयोजन पर हर्ष प्रकट करते हुए विभिन्न देशों के वक्ताओं को “हिंदी नक्षत्र” की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि ऑनलाइन हिंदी शिक्षण अंधेरे में भी रोशनी देकर दिलचस्पी लेने वालों की सम-सामयिक वैश्विक जरूरत पूरी कर सकता है। मानव जीवन को सफल बनाने हेतु हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति में महत्वपूर्ण सामग्री विद्यमान है। चीन के क्वानतोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय के प्रो. विवेक मणि त्रिपाठी ने ऑनलाइन हिंदी शिक्षण को नितांत नई दिशा बताते हुए कहा कि चीन में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी को पी.पी.टी. के माध्यम से पढ़ाना काफी प्रभोत्पादक है। इसमें दृश्य श्रव्य सामग्री के अलावा अर्थ सम्प्रेषण में चित्रों का सहारा सहज ही बोधन कराता है किन्तु विद्यार्थियों को अनुशासित रखना अपेक्षाकृत कठिन होता है। उन्होंने विभिन्न देशों की शिक्षा प्रक्रिया के अनुसार हिंदी शिक्षण का स्तरीय मानक पाठ्यक्रम बनाने और अधिकाधिक देशों में हिंदी केंद्र खोलने की सलाह दी।

अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को से जुड़े ऑनलाइन हिंदी यूनिवर्सिटी के संस्थापक और तकनीकीविद श्री आशुतोष अग्रवाल ने सहर्ष कहा कि हम हर रविवार भी मुफ्त हिंदी कक्षाएँ पढ़ाते हैं जिसमें “पेंगु लर्न” हिंदी पुस्तक काफी सहायक है। उन्होंने प्रयोग और अनुभवजन्यता से कहा कि यहाँ अभिप्रेरण से हिंदी सीखने वाले जिज्ञासु स्वतः स्फूर्त होकर जुड़ते और हिंदी पढ़ते हैं। उनका मत था कि ऑनलाइन शिक्षण में सरलीकरण, अनुशासन, प्रभावी पद्धति और विषय संकेन्द्रण आदि अति आवश्यक है। स्विट्जरलैंड मूल की प्राध्यापिका और फ्रेंच, जर्मन आदि सात भाषाओं की ज्ञाता डॉ. अनीता स्यूस का कहना था कि उन्हें हिंदी व्याकरण बहुत पसंद है और वे हर सेमेस्टर में ऑनलाइन कक्षाएँ आनंद से पढ़ाती हैं तथा उत्तरोत्तर हिंदी का ज्ञान बढ़ा रही हैं। सिंगापुर में हिंदी अध्यापन से जुड़ी प्राध्यापिका थैसा बेलमोंट ने कहा कि मूलतः वकील होने के बावजूद उन्हें हिंदी फिल्मों से हिंदी सीखकर पढ़ाने की प्रेरणा मिली। भारत विभाजन की घटना ने उन्हें बहुत प्रभावित किया और भारत भ्रमण के दौरान नागालैंड सहित भारत के अनेक हिस्सों के मित्रों से भारतीय भाषा और संस्कृति सीखने में बहुत मदद मिली। वे नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर की प्रो. संध्या सिंह से हिंदी सीखकर मनोयोग से पढ़ाती हैं। उन्होंने ऑनलाइन हिंदी शिक्षण को बहुत प्रभावशाली एवं दूर दराज तक आसान पहुँच वाली प्रक्रिया बताया। मौके पर ही श्रोताओं और चैट बॉक्स के प्रश्नों का वक्ताओं द्वारा विश्लेषण सहित उत्तर दिया गया।

दिल्ली से साहित्यकार डॉ. राजेश कुमार द्वारा विषय प्रवर्तन और सागरभित्त शुरुआत की गई, आस्ट्रेलिया से प्रवासी साहित्यकार डॉ. रेखा राजवंशी के द्वारा संचालन किया गया। सिंगापुर से कार्यक्रम की मुख्य संयोजक प्रो. संध्या सिंह द्वारा आभार प्रकट किया गया।

- वैश्विक हिंदी परिवार के 17 दिसम्बर 2023 के कार्यक्रम की रिपोर्ट



हिन्दी शोध की चुनौतियाँ : जिज्ञासाएँ और समाधान

वैश्विक हिंदी परिवार के तत्वावधान में विश्व में हिंदी शोध की चुनौतियों और नई दिशाओं की महत्ता के मद्देनजर विशेष रविवारीय व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय गांधीनगर के पूर्व प्रोफेसर डॉ. आलोक गुप्त ने इक्कीसवीं सदी में महाशक्ति के रूप में उभरते भारत की भाषा हिंदी के शोध की दिशा में नए आयाम बताए। उन्होंने कहा कि तुलनात्मक दृष्टि से हिंदी में शोध सर्वाधिक हो रहा है किन्तु इसका स्तर कायम रखना निहायत जरूरी है। कैरियर और कंपीटीशन शोध कार्य में बाधक नहीं होने चाहिए। पच्चीस पी.एच.डी. और पचास से अधिक एम. फिल. करा चुके डॉ. गुप्त ने कहा कि शोध निर्देशक और शोधार्थी को “रिले रेस” की तरह अपनी जिम्मेदारी और मर्यादा में रहना चाहिए। हिंदीतर भाषी शोधार्थी शोध-सामग्री अपनी भाषा में पढ़कर तुलनात्मक शोध बेहतर कर सकते हैं। शोधार्थी को आत्मावलोकन, गौरव और स्वाभिमान से आगे बढ़ना चाहिए।

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. हरीश अरोड़ा ने कहा कि आज के तकनीकी युग में विषय का ठीक से चयन करने के पश्चात शोध लेखन में संकेन्द्रण और नए मानकों पर खरा उतरना आवश्यक है। भारतीय जीवन दृष्टि और व्यावहारिकता के साथ परंपरा और आधुनिकता में समन्वय होना चाहिए। पुस्तकालय और पुस्तक पठन के साथ गहन चिंतन, मनन और गठन के पश्चात चरणबद्धता के साथ सार तत्व का लेखन हो। उन्होंने कहा कि किसी भी स्थिति में केवल उपाधि के लिए शोध और साहित्यिक चोरी नहीं होनी चाहिए।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के प्रो. राम नरेश मिश्र ने कहा कि शोध की गंभीरता हर हाल में कायम रहनी चाहिए। सुनिश्चित विषय चयन के अनुरूप ही रूपरेखा सुगठित की जानी चाहिए। भाषा वैज्ञानिक एवं 43 पुस्तकों के लेखक और सैकड़ों शोधार्थियों के मार्गदर्शक तथा कुशल प्रशासक प्रो. मिश्र ने कहा कि क्षतिपूर्क दीर्घाकरण और भाषा विज्ञान तथा व्याकरण के सिद्धांतों सहित मानकता व तार्किकता का अवश्य पालन होना चाहिए। लेखन में महाराण के संकट में होने पर अल्पप्राण छोटे भाई की तरह सहायता करता है।

मुंबई से डॉ. वागीश दत्त गौतम का मत था कि केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, निगमों, निकायों और बैंकों आदि में भी राजभाषा और अनुवाद से जुड़े रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं।

दिल्ली से शोधार्थी श्री जितेंद्र कुमार द्वारा आत्मीयता पूर्वक स्वागत किया गया। दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. राजेश गौतम द्वारा यथोचित भूमिका के साथ शालीनता, विद्वता और सधे हुए संतुलित मृदुल स्वर में संचालन किया गया। समूचा कार्यक्रम विश्व हिंदी सचिवालय, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद और केंद्रीय हिंदी संस्थान के सहयोग से वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी के मार्गदर्शन और सुयोग्य समन्वयन में संचालित हुआ। अंत में श्री जितेंद्र कुमार चौधरी द्वारा माननीय अध्यक्ष, विद्वान वक्ताओं, सुधी श्रोताओं और सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

- वैश्विक हिंदी परिवार के 24 दिसम्बर 2023 के कार्यक्रम की रिपोर्ट



रचनात्मक जीवन: दिशा और दृष्टि

वैश्विक हिंदी परिवार के तत्वावधान में विश्व हिंदी सचिवालय, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद और केंद्रीय हिंदी संस्थान तथा वातायन के सहयोग से “रचनात्मक जीवन की दिशा और दृष्टि” विषय पर गहन चर्चा हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात लेखक श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि जीवन में देखने की अपेक्षा दृष्टि का विशेष महत्व है। सूर और तुलसी आदि की तरह दृष्टि ही दिशा तय करती है। हम निजता का विसर्जन करते हुए प्रेम से रूह के निकट आएँ। स्वर्ग की वस्तुएँ धरती से मिले बिना मनोहर नहीं होतीं। साहित्य, संगीत और कला की रचनात्मकता में समग्रता के साथ जीवन के लिए चिर-नवीनता बनी रहनी चाहिए।

मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात साहित्यकार एवं चिंतक तथा मध्य प्रदेश शासन के पूर्व अपर मुख्य सचिव श्री मनोज श्रीवास्तव का कहना था कि आङ्ग्ल कैलेंडर वर्ष के पीछे औपनिवेशिक पृष्ठभूमि है। हमें चिरंतन चेतना के मद्देनजर स्वयं दिशानुबन्धित होना होगा। यह जनतंत्र के बचाव का समय है। आगामी वर्ष में दुनियाँ के 73 देशों में चुनाव संभावित हैं। आने वाले समय में, रामानुजप्रेरित जीवन की दिशा और दृष्टि श्रेयस्कर होगी। हम आज्ञा पालन के साथ अपर्याप्तता का अहसास न होने दें और शून्य को भरें तथा किसी भी स्थिति में आक्रामक और विध्वंसक न हों। रचनात्मकता में परास्त न होने की जिद होती है, अतएव झूठी आत्मसंतुष्टि से बचना और विभाजक रेखा को झुठलाना होगा।

कार्यक्रम में सान्निध्य प्रदान करते हुए वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष एवं प्रवासी साहित्य के मर्मज्ञ श्री अनिल जोशी ने अपनी कविता में प्रस्तुति दी कि “प्रश्न पृच्छती रोज जिंदगी, मैं बगलें झांक रहा हूँ। अपनी आत्मा की ऊंचाई, सुविधाओं में आंक रहा हूँ”। नव वर्ष की शुभ कामनाएँ देते हुए उन्होंने “जैसे मेरे हों प्रभु, वैसे सबके हों प्रभु” रचना सुनाकर शुभाशंसा दी।

रिपोर्ट लेखन - डॉ. जयशंकर यादव

- 31 दिसम्बर 2023 की रिपोर्ट

दो देश, दो कहानियाँ



लंदन, 30 दिसंबर, 2023: वातायन-यूके की 162वीं संगोष्ठी का ऑनलाइन आयोजन

किया गया जिसके अंतर्गत अमेरिका की डॉ. कुसुम नैपसिक तथा भारत के श्री शुभम नेगी ने अपनी-अपनी कहानियों का सुरुचिपूर्ण पाठ किया। अध्यक्ष थे सुप्रसिद्ध कहानीकार और आलोचक श्री राकेश बिहारी और सूत्रधार प्रवासी लेखिका डॉ. शैलजा सक्सेना। 'दो देश, दो कहानियाँ' श्रृंखला दो संस्थाओं नामतः 'वातायन-यूके' तथा 'हिंदी राइटर्स गिल्ड-कनाडा' की संयुक्त प्रस्तुति है जिसे कहानी विधा के रसिया पाठकों द्वारा खूब सराहा जाता है। वातायन संस्था के कार्यक्रमों में वैश्विक हिंदी परिवार एक भागीदार है। डॉ. शैलजा सक्सेना ने मंच-संचालन किया।

अमेरिका की ड्यूक विश्वविद्यालय में हिंदी की सीनियर प्राध्यापिका कुसुम नैपसिक ने 'जीवन के रंग' शीर्षक से अपनी मार्मिक और हृदयस्पर्शी कहानी का सुरुचिपूर्ण पाठ किया जिसकी नायिका मौली, गर्भ धारण न कर पाने की व्यथा से हताश रहती है और इसके लिए वह अपने पति डेविड को दोषी ठहराती है क्योंकि उसने ही उसे गर्भ-निरोधक गोलियाँ खिला-खिला कर उसे इस बाँझपन जैसी स्थिति में ला खड़ा किया है। निःसंतानता से अभिशप्त, जब उसे एक दिन जाँच में अचानक पता चलता है कि वह गर्भवती हो गई है तो वह अपनी इस अपार खुशी को साझा अपने पति और घरवालों से करना चाहती है लेकिन इस खुशी के साथ-साथ उसकी चिंताएं भी बढ़ने लगीं क्योंकि अब उसे बच्चे की परवरिश में बढ़ने वाले खर्चों से निपटने के लिए स्वयं आय का स्रोत तलाशना होगा।

तदनंतर, हिमाचल प्रदेश के कथाकार शुभम नेगी, जो डेटा साइंटिस्ट के रूप में मुम्बई में

कार्यरत हैं, की कहानी 'टिफिन के माले' में दुःख के विभिन्न पर्यायों का उल्लेख करते हुए दुःख के स्रोत को ढूँढने का प्रयास करते हैं। जब यह विश्लेषण एक बिंदु पर आकर ठहर जाता है तो आत्मकथात्मक शैली में शुभम की कहानी शुरू होती है, जिसमें वह अपने 'स्व' को तलाशने की कोशिश करते हैं। कहानी एक बच्चे की उसके स्कूल में यौन गतिविधियों के इर्द-गिर्द घूमती है और कथाकार उसके बाल मनोविज्ञान की पड़ताल करता है। निःसंदेह, कहानी मर्मस्पर्शी है जो आद्योपांत पाठकों को बाँधे रखती है।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्यकार राकेश बिहारी ने दोनों कथाकारों को बधाई दी और कहा कि दोनों कहानियाँ कहीं-न-कहीं आपस में दर्द के धागे से जुड़ती-सी लगती हैं। बच्चे के इर्द-गिर्द घूमती हैं- कुसुम की कहानी में बच्चे की प्रतीक्षा है तो शुभम की कहानी में बच्चे की तकलीफ़ दृष्टिगोचर होती है। कुसुम की कहानी में कोरोना के प्रकोप से कहानी की दिशा ही बदल जाती है। ऐसे में, कहानी स्त्री-पुरुष के पारंपरिक संबंधों को छोड़कर एक अलग दिशा में बढ़ जाती है। राकेश बिहारी जी जब मौली के पति डेविड के भीतर मौजूद स्त्री या पुरुष मित्र की मौली के प्रति चिंता में सहभागी होने की बात का खुलासा करते हैं तो ऐसा न केवल मौली के लिए खुशी का कारक बनता है बल्कि इससे श्रोता-दर्शकों को भी आत्मसंतोष होता है। उन्होंने बड़ी दक्षता और सर्वांगीणता से दोनों कहानियों के कला पक्ष और भाव पक्ष पर सधी हुई समीक्षा प्रस्तुत की तथा दोनों कथाकारों की सराहना की।

■



**‘वातायन-यूके’ द्वारा ‘भारोपीय हिंदी महोत्सव-लंदन’
और ‘वातायन अंतरराष्ट्रीय सम्मान समारोह-2023 का आयोजन**

हिंदी

भाषा और साहित्य को वैश्विक स्तर पर प्रचारित-प्रसारित करने की दिशा में लंदन की विश्व-विख्यात संस्था 'वातायन-यूके' द्वारा लंदन में 13 से 15 अक्तूबर, 2023 में यूके हिंदी समिति, ऑक्सफोर्ड बिजनेस कॉलेज, इंद्रप्रस्थ कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय), अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद, वैश्विक हिंदी परिवार और कई स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से 'भारोपीय हिंदी महोत्सव-2023' का आयोजन बहुरंगी कार्यक्रमों का एक ऐसा गुलदस्ता था, जिसे स्वयंसेवी सदस्यों ने अपनी पूर्ण श्रमशीलता और प्रतिभा से सजाया-संवारा था। इसकी संरक्षक-प्रबंधक और साहित्यकार सुश्री दिव्या माथुर द्वारा संयोजित, इस महोत्सव का उद्घाटन भारत सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री, सांसद और प्रख्यात साहित्यकार माननीय रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी ने किया। महोत्सव के निदेशक डॉ. पद्मेश गुप्त ने हाउन्सलो के मेयर, ब्रिटिश सांसद वीरेंद्र शर्मा, भारत के भाषाविद डॉ. एम. एन. नंदकुमार, पद्मश्री आलोक मेहता तथा अनिल जोशी आदि जैसे प्रतिष्ठित अतिथियों की उपस्थिति में कार्यक्रम का अविस्मरणीय संचालन किया गया। अपने बीज-वक्तव्य में वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल शर्मा जोशी ने कहा कि हिंदी को विश्व-भाषा बनाने के लिए सतत प्रयत्न करने होंगे। इस अवसर पर डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की पुस्तक 'शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण' और राकेश पांडे द्वारा संपादित 'प्रवासी संसार (हिंदी महोत्सव को समर्पित)' विशेषांक का भी लोकार्पण किया गया। महोत्सव के अंतर्गत, जाने-माने शिक्षाविद् और हिंदी प्रचारक श्री संतोष चौबे को 'वातायन अंतरराष्ट्रीय शिखर सम्मान', हिंदी की सर्वजनप्रिय कवयित्री प्रो. अनामिका को 'वातायन अंतरराष्ट्रीय साहित्य सम्मान', प्रो. हाइन्स वर्नर वेस्लर और दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रो. रेखा सेठी को संयुक्त रूप से 'अंतरराष्ट्रीय वातायन शिक्षा सम्मान' से नवाजा गया।

महोत्सव के अन्य सत्रों में अनुवाद, प्रवासी लेखन, वैश्वीकरण और हिंदी भाषा, यूरोप में हिंदी शिक्षण, साहित्य और सिनेमा, भारतीय भाषाओं की एकता, हिंदी भाषा और साहित्य के भविष्य पर अनेक सत्रों में व्यापक रूप से विचार-विमर्श हुआ तथा प्रतिभागी चर्चाकारों के मौलिक विचारों को सराहा गया। विश्व के विभिन्न देशों से पधारे प्रतिनिधियों में डॉ. सच्चिदानंद जोशी, प्रो. निरंजन कुमार, प्रो. मोनिका ब्रोवार्जिक, प्रो. मिलिना ब्रातोएवा, प्रो. तातियाना ओरानस्किया, प्रो. सत्यकेतु सांस्कृत, प्रो. यूरी बोटविंकिन के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

महोत्सव का समापन समारोह रंगारंग कार्यक्रमों से सुसज्जित था जिनमें हिंदी के

लेखकों और भाषाविदों को सम्मानित किया गया। ब्रिटिश काउंसिल और वाणी फाउंडेशन के सहयोग से प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा प्रस्तुत कलम-ओ-उत्सव के अंतर्गत गहन संवाद-चर्चा का एक सत्र भी आयोजित किया गया जिसमें हिंदी लेखकों डॉ. अनामिका, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, प्रत्यक्षा सिन्हा, मनीषा कुलश्रेष्ठ, अनिल जोशी, डॉ. राजेश कुमार की सहभागिता रही। समापन डॉ. डोना गांगुली मंडली की भावपूर्ण नाट्य प्रस्तुति से हुई।

शिक्षा और संस्कृति उत्थान न्यास के अध्यक्ष श्री अतुल कोठारी समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे जिन्होंने लंदन महोत्सव के प्रस्तावों और उनके सफल-सार्थक क्रियान्वयन में अपना पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। इस महोत्सव का उद्देश्य हिंदी भाषा और साहित्य के वैश्विक प्रचार-प्रसार हेतु प्रतिभागियों को वचनबद्ध और संकल्पित करना था। इस प्रयोजनार्थ, अनेक प्रस्तावों पर उनकी आम सहमति बनी जिनमें हिंदी केंद्र की स्थापना, सिंगापुर में अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन, अंतरराष्ट्रीय विश्वरंग महोत्सव 2023, भोपाल तथा भारतीय भाषा सम्मेलन 2024, दिल्ली में आयोजित किए जाने के अतिरिक्त देहरादून में 'लेखक गाँव' की स्थापना, हिन्दी के ऑनलाइन प्रशिक्षण, हिंदी के कार्यसाधक ज्ञान के लिए वैश्विक स्तर पर मानक ऑनलाइन पाठ्यक्रम की शुरुआत, दिल्ली में हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता के आयोजन, हिन्दी साहित्यकारों की स्मृति के संरक्षण जैसे प्रस्तावों पर भी सभी उपस्थितों का मतैक्य था। इसके अलावा, विभिन्न भाषाओं की सर्वश्रेष्ठ 100 पुस्तकों का हिंदी में और विलोमतः अनुवाद करने और प्रवासी साहित्य का इतिहास तैयार करने के भी प्रस्ताव सर्व स्वीकृत हुए। इस प्रस्ताव पर सर्व-सहमति बनी कि भारतीय मिशन/दूतावासों में एक-एक अधिकारी को हिंदी एवं भारतीय भाषाओं से संबंधित कार्य-भार सौंपा जाए। बाल एवं किशोर साहित्य के प्रचुर सृजन और इसके प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करने पर भी जोर दिया गया। यह भी प्रस्तावित हुआ कि हिन्दी के प्रमुख विषयों पर रचनात्मक कार्यशालाओं के सतत आयोजन किए जाएं। कार्यक्रम के आयोजन में तितिक्षा शाह, डॉ. मीरा कौशिक, ऋचा जैन, सुरेखा जी, शशि बाला इत्यादि का विशेष योगदान रहा।

(रिपोर्ट-डॉ. मनोज मोक्षेंद्र)

सिंगापुर संगम पत्रिका



(पत्रिका के कुछ अंकों के आवरण चित्र)

सिंगापुर की पहली हिंदी पत्रिका 'सिंगापुर संगम'

जिस देश में हज़ारों विद्यार्थी वर्षों से हिंदी भाषा सीख रहे हों, सैकड़ों अध्यापक शिक्षण कार्य में लगे हों, प्रवास का लंबा इतिहास रहा हो, वहाँ से किसी भी प्रकार का प्रकाशन न होना कहीं -न -कहीं टीस पैदा करता था। वर्षों के प्रयास के बाद सिंगापुर में पंजीकृत त्रैमासिक पहली हिंदी पत्रिका 'सिंगापुर संगम' की शुरुआत जनवरी 2018 में हुई। इस पत्रिका ने साहित्य लेखन में बड़ी भूमिका निभाई है और सिंगापुर का नाम पिछले कुछ वर्षों में साहित्य लेखन में उभर कर आया है। किसी को सबसे पहले प्रकाशित होने के लिए मंच सिंगापुर संगम द्वारा मिला तो किसी ने इसके माध्यम से अपने लेखन का दायरा बढ़ाया। सिंगापुर संगम हिंदी भाषा की परिपाटी को आगे बढ़ाने की एक पहल है। इसके माध्यम से साहित्य और विमर्श आदि पहुँचाना एक

उद्देश्य तो है ही, साथ ही बच्चों, युवाओं में हिंदी के प्रति प्रेम बढ़ाने की कोशिश भी है। प्रारम्भ से ही पत्रिका के लिए कुछ उद्देश्य तय किये गए जैसे युवा वर्ग, विदेशी मूल के लोगों को स्थान देना ताकि हिंदी अधिक समृद्ध हो। पत्रिका स्थानीय रचनाकारों को आगे बढ़ाने के साथ ही प्रतिष्ठित रचनाकारों की रचनाएँ प्रकाशित करती है। समय-समय पर पत्रिका विशेषांक भी निकालती है जैसे 'विश्व में हिंदी' विशेषांक, विद्यार्थी विशेषांक, शक्ति विशेषांक, बाल साहित्य विशेषांक आदि। समय के साथ पत्रिका अपने स्वरूप में परिवर्तन भी कर रही है। पत्रिका की संस्थापक/सम्पादक - डॉ. संध्या सिंह हैं।

पत्रिका की वेबसाइट- www.singaporesangam.com

ईमेल पता-sangam.singapore@gmail.com



हिन्दी राइटर्स गिल्ड कॅनेडा का सफल “शरदोत्सव-2023”

हिन्दी

राइटर्स गिल्ड, कॅनेडा ने 16 दिसम्बर 2023 को शरदोत्सव-2023 का भव्य आयोजन किया। इस कार्यक्रम में हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्य रत्नों - “यशोधरा” (मैथिलीशरण गुप्त), “कनुप्रिया” (धर्मवीर भारती), “रश्मिरथी” (रामधारी सिंह दिनकर) के काव्यांश और प्रसिद्ध व्यंग्यकार गिरीश पंकज के नाटक “देश की पुकार” की प्रस्तुतियाँ दी गईं। श्रीमती मानोशी चैटर्जी की मधुर सरस्वती वंदना के उपरान्त श्री सुमन कुमार घई ने अतिथियों का स्वागत किया और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत के कौंसलावास के चांसरी अध्यक्ष श्री संजीव सकलानी जी को उद्बोधन वक्तव्य देने के लिए आमंत्रित किया। श्री सकलानी जी ने हिन्दी के प्रसार कार्यों पर गिल्ड को बधाई देते हुए कौंसलावास के सहयोग की बात कही। श्रीमती कृष्णा वर्मा ने गिल्ड की अनेक उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी।

कार्यक्रम दो बच्चों द्वारा मानवता की एकता के संदेश की प्रस्तुति से प्रारंभ हुआ, अविका सिंह (6 वर्ष) ने डॉ. बंदिता सिन्हा के साथ नाटकीय अंदाज़ में कपड़े बदल-बदल कर धर्मों की विभिन्नता के बाद भी सभी मनुष्यों के एक होने का संदेश दिया और श्लोक सिंह (11 वर्ष) ने छठ पर्व की महत्ता को विस्तार से दर्शकों की तालियों के बीच प्रस्तुत किया। इसके बाद “कनुप्रिया” के “कनु तुम मेरे कौन हो” काव्यांश को नृत्य नाटिका के मोहक रूप में भरतनाट्यम नृत्यांगना आशाना सक्सेना ने प्रस्तुत किया। “रश्मिरथी” के प्रसिद्ध कर्ण-कृष्ण संवाद की प्रस्तुति में अपने नाट्य वाचन से रोमांचित करने वाले अभिनेता थे, पीयूष श्रीवास्तव (कृष्ण), संदीप सिंह (कर्ण) और अनेक नाटकों में अभिनय कर चुके अभिनेता/लेखक विद्याभूषण धर (सूत्रधार)। “यशोधरा” खंड-काव्य के दो प्रसिद्ध गीतों - “सखी वे मुझसे कह कर जाते” और “आओ हो वनवासी” को आधार बना कर स्त्री-मुक्ति का प्रश्न उठाती गद्य नाटिका को डॉ. शैलजा सक्सेना ने लिखा और मानोशी चैटर्जी की भावनात्मक स्वर लहरी के साथ सखी (शैलजा) और यशोधरा (मानोशी) ने संवाद रूप में प्रस्तुत किया। इस गीति-नाट्य ने सभी दर्शकों को भावुक कर दिया। इसके बाद प्रीति अग्रवाल ने अपनी सशक्त लघुकथा “चटनी” का पाठ किया जिसमें विवाह के समय लड़की को कर्तव्य के साथ अधिकारों के बारे में भी सचेत करने का संदेश दिया गया था। अंत में गिरीश पंकज जी के व्यंग्य नाटक “देश की पुकार” की प्रस्तुति की गई जिसमें दिखाया गया था कि गड्ढे में पड़े बूढ़े देशकुमार को सड़क पर चलने वाले लोग निकालने की चेष्टा करने के स्थान पर छींटाकशी, राजनीति और व्यंग्य करते हैं। अंत में एक बच्चा देशकुमार को गड्ढे से बाहर निकालता है। इस नाटक के सशक्त संदेश और कलाकारों के उत्तम अभिनय से सभी मंत्रमुग्ध थे। नाटक की निर्देशिका थीं- कृष्णा वर्मा और भाग लेने वाले कलाकार थे- पीयूष श्रीवास्तव, संदीप सिंह, विद्याभूषण धर, दीपक राजदान, सुरेश पांडेय, नवीन पांडेय, कृष्णा वर्मा और बूढ़े की भूमिका में कुशल अभिनय करने वाले- डॉ. नरेन्द्र ग्रोवर।

कार्यक्रम की परिकल्पना डॉ. शैलजा सक्सेना की थी। संयोजन कार्य पूनम चंद्रा 'मनु' ने किया और श्री योगेश ममगाई जी ने सधे हुए संचालन से सारे कार्यक्रम को बाँधे रखा। कार्यक्रम का अंत नववर्ष की मंगलकामनाओं और सुस्वादु जलपान से हुआ।

■ रिपोर्ट - शैलजा सक्सेना, हिन्दी राइटर्स गिल्ड कनाडा



पलायन से अंतिम शरण तक : एक महागाथा उपन्यास 'तिलिस्म' की समीक्षा

एक वृहत उपन्यास आपको तीन से चार बैठकों में पढ़वा ले जाए तो वह उपन्यास निश्चय ही विराट फलक पर रची नयी विषय-वस्तु और पठनीयता से भरा होगा। दिव्या माथुर का लिखा उपन्यास 'तिलिस्म' एक तरफ पाठक को अतीत में लिए जाता है। माहिर लेखक जानते हैं कि अपनी बात को कैसे तथ्य और तर्क के साथ संप्रेषणीय अंदाज़ से कहा जाता है; यही उपन्यास कला का परिपाक है।

आरंभ के साथ ही थाइलैण्ड की जेल में ड्रग के केस में मृत्यु-दंड के तौर पर लीथल-इंजेक्शन (प्राणघातक-सुई) की प्रतीक्षा में सुन्न बैठे उपेन्द्र के जीवन से पाठक जुड़ता है तो अंत तक उत्सुकता से जुड़ा ही रहता है। उपन्यास जब समाप्त होता है तो लगता है आप एक जीवन जीकर निकले हैं। इसमें पात्रों की कमजोरियाँ, उनका समय के साथ एकदम बदल जाना, कमज़ोर पड़ना आदि एक समूचा महाभारत सा लगता है।

आजकल बहुत से उपन्यास लिखे जा रहे हैं, कितने आप पर गहरा असर डालते हैं? अनुभवों और कल्पनाओं को एकाकार कर कथानक को जीवंत भाषा में, दक्षता और दृश्यात्मकता के साथ लिखने वाले गिनती के हैं। लेखन में मारक क्षमता तभी आती है, जब लेखक उस लिखे को जीता हुआ चले, अपनी कथा कहते नायक को अपने निर्णय लेने, गलतियाँ करने और अपनी ग्रंथियों के बीच उलझने की स्वतंत्रता दे। उसे महामानव की जगह मनुष्य होने की छूट दे।

पात्र और परिवेश के अनुसार कई तरह के भाषाई प्रयोग इसमें आए हैं। इसका सबसे मजबूत पक्ष परिवेश चित्रण है जो हमें पुरानी दिल्ली और उस समय के लंदन की यात्रा करवाता है। बड़े कालखंड को समेटे इस उपन्यास में कुछ सीमाएँ तथा कुछ चुनौतियाँ अपेक्षित थीं ही, जिनका वहन लेखिका ने कुशलतापूर्वक किया है।

समीक्षक- मनीषा कुलश्रेष्ठ
उपन्यासकार- दिव्या माथुर
प्रकाशक- वाणी प्रकाशन, दिल्ली

55 देशों में हिंदी की स्थिति के आकलन का ऐतिहासिक कार्य



रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल का अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आयोजन 'विश्व रंग' प्रारंभ से ही हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को केंद्रीयता प्रदान करता आ रहा है। वर्ष 2019 में विश्व रंग की शुरुआत इस अवधारणा के साथ हुई कि हिंदी में वैश्विक भाषा बनने की प्रबल संभावना है। संपूर्ण विश्व में हिंदी का प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार विभिन्न माध्यमों से हो रहा है। गिरमिटिया देशों के अलावा एशिया, अफ्रीका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, उत्तर-अमेरिका और दक्षिण-अमेरिका महाद्वीप आदि क्षेत्रों में कुल 100 से अधिक देशों में हिंदी किसी न किसी रूप में प्रचलित है। अनेक देशों में हिंदी से प्यार करने वाले लोगों ने अपने विशिष्ट समूह बनाए हैं और वे लगातार भारतीय कला, संस्कृति और भाषा के प्रचार-प्रसार का काम कर रहे हैं। इन जगहों पर, सामाजिक जीवन में साहित्य के आदान-प्रदान एवं सृजन के साथ-साथ भाषा शिक्षण को भी महत्व दिया जा रहा है। विश्व के 150 से अधिक विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों और विद्यालयों के अलावा सैकड़ों स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा भी हिंदी शिक्षण का कार्य संपूर्ण विश्व में किया जा रहा है।

इन्हीं सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए विश्व रंग के आयोजकों ने महसूस किया कि इस दिशा में सार्थक कदम बढ़ाए जाएँ। इसके लिए आवश्यक था कि विश्व भर में हिंदी के प्रतिस्थापन का इतिहास और वर्तमान स्थिति का आकलन सामने हो ताकि भविष्य की रूपरेखा निर्धारित हो सके। ऐसी कोई आधारभूत रिपोर्ट उपलब्ध नहीं थी जो इस कार्य का प्रस्थान बिंदु बन सके और जिसे लगातार अद्यतित भी किया जाता रहा हो। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष डॉ. विनय सहस्रबुद्धे ने भी 2022 में विश्व रंग की गतिविधियों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए यह आवश्यकता बताई थी कि हिंदी के लिए हमें एक ऐसा आधार पत्र तैयार करना चाहिए जिसमें विभिन्न देशों में हिंदी की वर्तमान स्थिति का आकलन हो और जिसके आधार पर एक कार्य योजना बनाई जा सके। विश्व रंग के निदेशक श्री संतोष चौबे के मार्गदर्शन में रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के प्रवासी भारतीय साहित्य एवं संस्कृति शोध केंद्र के सलाहकार डॉ. जवाहर कर्नावट ने अपने प्रवासी और विदेशी मित्रों के सहयोग से यह रिपोर्ट तैयार की है जिसमें विभिन्न महाद्वीपों में हिंदी की वर्तमान स्थिति का आकलन किया गया है। इस रिपोर्ट में एशिया के 19, यूरोप के 24, ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप के 3, उत्तरी अमेरिका के 2, दक्षिण अमेरिका के 3 और अफ्रीका महाद्वीप के 4 देशों को मिलाकर 55 देशों में हिंदी के इतिहास और वर्तमान स्थिति के विविध आयामों को विस्तार से दर्शाया गया है। निश्चित ही यह रिपोर्ट हिंदी के विस्तार को अगले चरण में ले जाने के लिए एक प्रारंभिक प्रस्थान बिंदु का काम करेगी और हिंदी-शिक्षण पर शोध के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। पुस्तक का प्रकाशन आइसेक्ट पब्लिकेशन, भोपाल ने किया है। इस महत्वपूर्ण कार्य को अत्यंत तन्मयता से करने के लिए डॉ. जवाहर कर्नावट जी को और आइसेक्ट पब्लिकेशन को आभार और बहुत बहुत बधाइयाँ।

• पुस्तक समीक्षा – डॉ. शिव कुमार सिंह



अपने लिए हमेशा खोजता रहता हूँ
किताबों की इतनी बड़ी दुनिया में
एक जीवन-संगिनी
थोड़ी अलहड़-चुलबुली-सुंदर
आत्मीय किताब
जिसके सामने मैं भी खुल सकूँ
एक किताब की तरह पन्ना-पन्ना
और वह मुझे भी
प्यार से मन लगा कर पढ़े...

- कुंवर नारायण

भारतीय सांस्कृतिक, वैश्विक मंच
भारत एवं पचास अन्य देशों में

Santosh Choubey
Director
E-mail : choubey@vishwarang.org
Co-Directors
Laxmidhar Mandal
E-mail : laxmidharmandal@gmail.com
Dr. Siddharth Chaturvedi
E-mail : siddharthchaturvedi.org
Mukesh Verma
E-mail : mukeshverma73@gmail.com
Dr. Aditi Chatterjee Vaid
E-mail : aditi@vishwarang.org

दिनांक: 25/01/2024

संदेश

मुझे यह जानकारी हार्दिक प्रसन्नता हुई कि वैश्विक हिंदी परिवार विश्व भर की हिंदी गतिविधियों को मंच प्रदान करने हेतु बुलेटिन का प्रकाशन करने जा रहा है।

निरिपक्ष रूप से इस बुलेटिन के प्रकाशन से वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा प्रशिक्षण एवं साहित्य के क्षेत्र में सज्जितता बढ़ेगी और समन्वय भी बेहतर ढंग से हो सकेगा।

वैश्विक हिंदी परिवार को इस रचनात्मक पहल के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

संतोष चौबे
निदेशक, विश्व रंग एवं
कुसायिपति,
स्वीडन/माय टेंगोर विश्वविद्यालय, ओपल

Organized by
RNTUM
SocioEconomics
AISECT
International Education

AGU Collaboration : Village Manika, Post Bagpur, Chikod Road, Near Bargosa, Chikoda, Dist. Rajkot, Pin-360513, MD, India
Contact no : +91 9808030452, E-mail : contact@vishwarang.org, Mr. +91 9808030452, E-mail : prajwal@vishwarang.org
Web site : www.vishwarang.org

संदेश

वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से बुलेटिन के प्रकाशन की पहल हिंदी के वैश्विक परिदृश्य को एक मंच पर लाने का सार्थक प्रयास है। वैश्विक हिंदी परिवार ने पिछले चार से अधिक वर्षों में वैश्विक स्तर पर अपने आयोजनों से एक विशिष्ट पहचान बनाई है। हिंदी भाषा, साहित्य, शिक्षण और प्रौद्योगिकी पर केंद्रित कार्यक्रमों की अनवरत श्रृंखला में 30 से अधिक देशों की सहभागिता से संपूर्ण विश्व में एक कीर्तिमान भी स्थापित हुआ है। इस बुलेटिन के माध्यम से वैश्विक हिंदी परिवार अपनी गतिविधियों को विस्तार देने के साथ ही विश्व की विविध हिंदी संस्थाओं से समन्वय कर एक नए वातावरण का सृजन भी कर सकेगा।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. जवाहर कर्नावट

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकारी प्रसन्नता है कि विश्व में हिंदी के क्रियाकलापों को प्रचारित प्रसारित करने के लिए वैश्विक हिंदी परिवार एक मासिक समाचार पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। आज का युग समाचार और संवाद का युग है। विश्व में अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान में रचनात्मक लेखन बड़े पैमाने पर हो रहा है। गिरमिटिया देशों में हिंदी के अनेक कार्यों से लोग अनभिज्ञ हैं। मेरा विश्वास है कि विश्व मंच पर जानकारी साझा करने में यह पत्रिका सफल होगी।

नियमित प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं,
नारायण कुमार
मानद निदेशक
अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद
नई दिल्ली

सुदृढ़ आधार- स्वस्थ विकास

कोई हड़बड़ी नहीं, कोई प्रतिस्पर्धा नहीं बल्कि अपनी दृढ़ता से कई लोगों, समूहों के लिए मंच तैयार करते हुए बिना किसी अपेक्षा के वैश्विक हिंदी परिवार एक संपूर्ण कुटुंब की तरह तत्पर रहा और जब लगा कि इस दृढ़ता को कुछ अलग आकार प्रदान किया जाए तो इस कड़ी में पत्रिका ने अपना स्वरूप साधा और यह आज हमारे बीच अक्षर-अक्षर, शब्द-शब्द में आपको महत्वपूर्ण जानकारी देने, और आपकी प्रतिक्रियाओं के लिए मुखरित है। वैश्विक हिंदी परिवार ने पिछले चार वर्षों से जिस प्रकार आधार बनकर कई ईंटों को स्तंभ रूप में परिवर्तित होने वाली मजबूती दी है उसी प्रकार उसका यह स्वरूप विश्व में हिंदी भाषा-साहित्य-संस्कृति के क्षेत्र में हो रहे कार्यों को भी आधार देकर प्रसारित करेगा और दिशा देगा। इस प्रसार व सृजन वीथिका में सबके सहयोग की अवश्य अपेक्षा रहेगी ताकि विश्व में हो रहे हिंदी कार्यों, साहित्य, शिक्षण और विभिन्न कार्यक्रमों की वीथिका अधिक सुगठित बने।

प्रवेशांक के लिए अनंत शुभकामनाएं !

डॉ. संध्या सिंह
सिंगापुर

वैश्विक हिंदी परिवार के प्रवेशांक का अभिनंदन

वातायन-वैश्विक का रिश्ता पुराना ही नहीं, शाश्वत है। यूं तो वातायन की स्थापना 2003 में की गई थी। हिंदी और भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार में मैं 1985 से जुड़ी थी। वर्ष 1992 के बाद डॉ. सत्येन्द्र श्रीवास्तव और इस्माइल चुनारा से मेरी मित्रता प्रगाढ़ होती चली गई। अक्सर वे नेहरु केंद्र में आ बैठते थे, लेखकों और कलाकारों के मिलने जुलने के लिए एक मंच बनाने का आग्रह अक्सर दोहराया जाता था। केंद्र के शुरुआती वर्षों में मैं अत्यंत व्यस्त रही। नेहरु केंद्र का मुख्य उद्देश्य भारत-ब्रिटिश संवाद को बढ़ावा देना था जिसके तहत हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्राथमिकता देना संभव नहीं था हालांकि इसकी आवश्यकता महसूस की जा रही थी। वर्ष 2003 में हमने तय किया कि हमें एक संस्था बनानी चाहिए। नामकरण के तहत मोहन राणा जी ने वातायन का नाम सुझाया जो सभी को पसंद आया और इस तरह वातायन: पोइट्री एट साउथ बैंक नामक संस्था का उद्घाटन रॉयल फ्रेस्टिवल हॉल में किया गया। बाकी का इतिहास तो सब जानते ही हैं।

अनिल शर्मा 'जोशी' वातायन के भी संस्थापक सदस्य हैं इसलिए हमने वैश्विक हिंदी परिवार को कभी अलग नहीं समझा। वातायन और वैश्विक हिंदी परिवार यूं भी प्रतिबद्धता, संकल्पना, परिकल्पना और साहस का प्रतीक हैं और यह पत्रिका हमारी जैसी संस्थाओं के उद्देश्यों, मूल्यों और लक्ष्यों को ऊर्जा प्रदान करेगी। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी यह एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी पत्रिका बनी रहेगी और हमारा पथप्रदर्शन करती रहेगी।

वातायन-यूके के सभी सदस्यों की ओर से मैं वैश्विक हिंदी परिवार पत्रिका का हार्दिक अभिनंदन करती हूं।

शुभकामनाओं सहित एवं सस्नेह,

दिव्या माथुर

आगामी प्रस्तावित कार्यक्रमों का विवरण

वैश्विक हिंदी परिवार के रविवारीय कार्यक्रम

- ❖ 21 जनवरी, 2024, डायस्पोरा और राम
- ❖ 28 जनवरी, 2024, भाषा प्रौद्योगिकी कार्यशाला
- ❖ 4 फरवरी, साक्षात्कार
- ❖ 11 फरवरी, वासंती कविताएं
- ❖ 18 फरवरी, हिंदी गुजराती अंतर्संबंध

संरक्षक

अनिल शर्मा 'जोशी'

मुख्य परामर्शदाता

शिव कुमार सिंह

संपादक

जयशंकर यादव

तकनीकी सहयोग

कृष्णा कुमार

मुद्रक : आनंद प्रिंटर्स,
नई दिल्ली-110055

वैश्विक हिंदी पत्रिका के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं।

पत्रिका का ई मेल : vhpatrika@gmail.com, फोन : +91 9448635109